विचार बिन्दु

जैसे जीने के लिए मृत्यु का अस्वीकरण ज़रूरी है वैसे ही सृजनशील बने रहने के लिए प्रतिष्ठा का अस्वीकरण ज़रूरी है। –डॉ. रघुवंश

राजस्थान : आध्यात्मिक विरासत और पर्यटन का संगम

राजस्थान केवल किले, महल और रेगिस्तानी पृष्ठभूमि का प्रदेश नहीं है; यह एक गहन आध्यात्मिक परंपरा और जीवंत धार्मिक संस्कृति का घर भी है। यहाँ के तीर्थ-स्थल, भक्तिमार्ग, संत-कवियों की धरती और ग्राम-परम्पराओं में निहित आध्यात्मिकता न केवल क्षेत्रीय पहचान को समृद्ध करती है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिये भी असीम संभावनाएँ प्रदान करती है। आध्यात्मिक विरासत को पर्यटन से जोड़ने का अर्थ केवल यात्रियों को पवित्र स्थलों तक पहुँचाना नहीं है; इसका व्यापक लक्ष्य है-स्थानीय सांस्कृतिक जड़ों का संरक्षण, अर्थव्यवस्था में विविधता लाना, सतत पर्यटन मॉडल अपनाना और समाज में पारस्परिक समझ तथा आत्मिक अनुभवों को बढ़ावा देना। राजस्थान में यह प्रयास सफलता पूर्वक तभी संभव है जब नीति-निर्माता, पर्यटन व्यवसाय, स्थानीय समुदाय और धार्मिक संस्थाएँ साझा दृष्टिकोण अपनाएँ और इसके लिये सुविचारित रणनीतियाँ बनायीं जाएँ।

आध्यात्मिक विरासत को सहेजने हेतु विरासत का सर्वे और दस्तावेजीकरण एक महत्वपूर्ण कार्य है कई ऐसे छोटे-छोटे मंदिर, आश्रम, संतों के समाधि स्थल और लोक-आस्था के केंद्र हैं जिनकी जानकारी सीमित है। राज्य सरकार और सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा इन स्थलों का सर्वे कर उनका नक़्शा तैयार करना आवश्यक है। सर्वे में स्थल की इतिहासिक पृष्ठभूमि, लोककथाएँ, त्यौहार, मौसमी गतिविधियाँ तथा स्थानीय समुदाय की भूमिका का समावेश होना चाहिए। इससे न केवल पर्यटन मार्गों की योजना बनाना आसान होगा, बल्कि संरक्षण के लिये निधि आवंटन और कानूनी सुरक्षा के तंत्र भी सुदृढ़ हों। डिजिटल दस्तावेजीकरण, ऑडियो-वीडियो अभिलेख, चित्र और कथात्मक वृत्तांत भविष्य में शोधकर्ताओं और इच्छुक पर्यटकों के लिये अमूल्य स्त्रोत बनेंगे।

हमें भावनात्मक और शैक्षिक अनुभव पर भी ध्यान देना होगा। आध्यात्मिक पर्यटन में यात्रियों की प्रतीक्षा केवल स्मारक-दर्शन की नहीं होती वे आत्मिक अनुभूति, ध्यान, साधना और सांस्कृतिक संवाद चाहते हैं। इसलिए तीर्थ-स्थलों पर सरल परन्तु गुणवत्तापूर्ण अनुभव पैकेज तैयार किये जा सकते हैं ध्यान वर्कशॉप, स्थानीय भजन-सत्र, योग शिविर, स्मरणीय कथाओं पर मार्गदर्शित कथा वाचन सत्र। इन गतिविधियों का उद्देश्य शोर-शराबे वाले दर्शनीय पर्यटन से अलग, शांत और अर्थपूर्ण प्रवास प्रदान करना है। इसके लिये प्रशिक्षित स्थानीय गाइड और आध्यात्मिक शिक्षकों की आवश्यकता होगी जिन्हें स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक संदर्भ की समझ हो।

स्थानीय समुदाय का सशक्तिकरण और सहभागिता आवश्यक है। आध्यात्मिक पर्यटन से होने वाले लाभ स्थानीय लोगों तक पहुँचें तभी यह टिकाऊ बनेगा। पंचायत, स्थानीय उद्यमी, हस्तशिल्पी और सेवाकार्यों में लगे लोगों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए हॉस्टिंग, गाइडिंग, खानपान, हस्तशिल्प का संवर्धन और छोटे-छोटे होमस्टे संचालन के लिये व्यापारिक प्रशिक्षण। साथ ही, पर्यटन से होने वाली आय का कुछ अंश स्थानीय संरक्षण कोष में रखा जाना चाहिए ताकि मंदिरों, मार्गों और पर्यावरण की मरम्मत नियमित रूप से हो सके। जब स्थानीय लोग अपने आध्यात्मिक स्थलों को संभालने में अग्रणी होंगे तो असली अर्थ में स्थानों की पहचान संजोई जा सकेगी।

> **ब्रांडिंग और प्रचार-प्रसार रणनीति को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। आध्यात्मिक पर्यटन को कहानी के रूप में बेचना प्रभावी सिद्ध हो सकता है। राजस्थान की सूफ़ी परम्पराएँ, भक्ति-संगीत की धरोहर, जैन और वैदिक स्थलों की ऐतिहासिक गाथाएँ, ग्रामीण त्योहारों की विशिष्टता-इन सभी को एक समृद्ध कथा में पिरो कर प्रमोट करना चाहिए। डिजिटल माध्यमों-वीडियो-डॉक्यूमेंट्री, वर्चुअल टूर, सोशल मीडिया कैंपेन और आध्यात्मिक ब्लॉग/पॉडकास्ट नए पीढ़ी के पर्यटकों तक पहुँचने में सहायक होंगे। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के लिये अंग्रेजी और अन्य प्रमुख भाषाओं में सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए, पर स्थानीय संस्कृति की असलियत में कोई छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए।**

सुनियोजित बुनियादी ढांचा और पहुँच सुनिश्चित करना होगा। कई पवित्र स्थल भीड़ से दूर, खराब सड़कों या परिवहन की सीमाओं में हैं। राज्य सरकार और स्थानीय निकायों को ऐसे मार्गों का उन्नयन, संकेत-प्रणाली की स्थापना, स्वच्छता सुविधाएं और आपातकालीन सेवाओं का प्रबंध करना चाहिए। साथ ही, पर्यावरण-संवेदनशील स्थानों के लिये टिकाऊ बुनियादी सुविधाओं पर जोर देना होगा सौर ऊर्जा, जल प्रबंधन, और अपशिष्ट निपटान की योजनाएँ ताकि पर्यटन से पर्यावरण पर दबाव कम से कम पड़े।

ब्रांडिंग और प्रचार-प्रसार रणनीति को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। आध्यात्मिक पर्यटन को कहानी के रूप में बेचना प्रभावी सिद्ध हो सकता है राजस्थान की सूफ़ी परम्पराएँ, भक्ति-संगीत की धरोहर, जैन और वैदिक स्थलों की ऐतिहासिक गाथाएँ, ग्रामीण त्योहारों की विशिष्टता-इन सभी को एक समृद्ध कथा में पिरो कर प्रमोट करना चाहिए। डिजिटल माध्यमों-वीडियो-डॉक्यूमेंट्री, वर्चुअल टूर, सोशल मीडिया कैंपेन और आध्यात्मिक ब्लॉग/पॉडकास्ट नए पीढ़ी के पर्यटकों तक पहुँचने में सहायक होंगे। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के लिये अंग्रेजी और अन्य प्रमुख भाषाओं में सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए, पर स्थानीय संस्कृति की असलियत में कोई छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए।

त्यौहारों और आयोजनों पे भी गौर करें। राजस्थान में कई छोटे व बड़े धार्मिक त्योहार होते हैं जिनका स्थानीय अर्थ गहरा है। इन त्योहारों को स्थायी और व्यवस्थित आयोजन के रूप में विकसित कर पर्यटन कैलेंडर में शामिल किया जा सकता है। परन्तु यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि त्योहारों का धार्मिक चरित्र व्यावसायीकरण की चपेट में न आए। आयोजन के दौरान पर्यटकों के लिये सांस्कृतिक सत्र, हस्तशिल्प मेलों और स्थानीय व्यंजनों का अनुभव प्रस्तुत किया जा सकता है, जिससे दोनों पक्षों स्थानीय कला और अर्थव्यवस्था को लाभ होगा।

शांतिपूर्ण और समावेशी अनुभव बनाये रखें। आध्यात्मिक पर्यटन में संवेदनशीलता का मायने है धार्मिक भावनाओं का सम्मान, प्रवेश नियमों की स्पष्ट जानकारी, पूजा-कार्यक्रम में व्यवधान न डालने की चेतावनियाँ और महिला व बुज़ुर्ग यात्रियों के लिये सुरक्षित वातावरण। साथ ही, ऐसे स्थलों पर धार्मिक मतभेदों के कारण विवाद उत्पन्न न हों, इसके लिये स्थानीय स्तर पर संवाद और सहमति निर्मित करना आवश्यक है। पर्यटन नीति में पारदर्शिता और नियमों का स्पष्ट पालन, यात्रियों और स्थानीयों के हितों का संतुलन बनाए रखेगा।

अनुसन्धान और शिक्षा का योगदान बढ़ायें। विश्वविद्यालयों, शोधसंस्थाओं और धर्म-इतिहास के विद्वानों को स्थानीय आध्यात्मिक परंपराओं का अध्ययन करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शोध से प्राप्त ज्ञान को लोक-शिक्षा कार्यक्रमों में, स्कूल पाठ्यक्रम में या स्थानीय संग्रहालयों में साझा किया जा सकता है। युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूक करने से दीर्घकालिक संरक्षण संभव है।

संयुक्त योजना और वित्तीय मॉडल विकसित करें। सरकारी अनुदान, निजी निवेश, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सहभागीता को मिलाकर एक बहु-स्त्रोत वित्त पोषण मॉडल अपनाया जाना चाहिए। परियोजनाओं के लिये स्पष्ट माइलस्टोन, जवाबदेही और पारदर्शी लेखांकन से निवेशकों और समुदाय दोनों का विश्वास बढ़ेगा। छोटे-छोटे पायलट प्रोजेक्ट शुरू कर उनका मूल्यांकन कर के सफल मॉडलों को स्केल-अप किया जा सकता है।

राजस्थान की आध्यात्मिक विरासत को पर्यटन से जोड़ना केवल आर्थिक योजना नहीं है यह एक नैतिक और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता भी है। जब पर्यटन नीति स्थानीय जनजीवन, धार्मिक भावनाओं और पारिस्थितिकी के प्रति संवेदनशील होगी, तभी यह क्षेत्र जीवंत, समृद्ध और टिकाऊ बन पाएगा। राजस्थान के तीर्थ-स्थल, साधन-संस्कृति और लोककथाएँ दुनिया भर के यात्रियों को आध्यात्मिक खोज के लिये आकर्षित कर सकती हैं यदि हम उन्हें सही ढंग से संरक्षित, प्रस्तुत और साझा करें। सरकार, स्थानीय समुदाय और निजी क्षेत्र मिलकर जब इस विरासत को अगली पीढ़ियों के लिये संजोएँगे, तभी राजस्थान का आध्यात्मिक पर्यटन वास्तव में सफल और सम्मानजनक रूप से फलित हो पाएगा।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

ख़्वाब से खूबसूरत और कुछ होता भी नहीं...

कुमार अजय

■ डायरी/कुमार अजय

मैं किसी ख़्वाब की फिराक में था। बहुत दिन हुए कोई ख़्वाब देखे। ख़्वाब से खूबसूरत और कुछ होता भी नहीं। ख़्वाब बुरा भी हो तो टूटते ही लुत्फ़ दे देता है। कितनी ही बार हुआ कि नींद में ख़्वाब देखते हुए कैसी-कैसी मुसीबतों से दो-चार होकर पसीना-पसीन, लाचार रहे लेकिन जैसे ही नींद टूटी और बुरा ख़्वाब गायब हुआ, एक सुकून-सा मिला। और इससे इतर, ख़्वाब अच्छा हो तो फिर क्या ही कहना। खूबसूरत हकीकत की बजाय हसीन ख़्वाब आपको ज्यादा बेहतर जिंदगी महसूस करा सकते हैं। जो है, वह खो जाने का डर आपको हमेशा डराते रहता है लेकिन वह डर जिस दिन खो जाता है, उस दिन आपकी जिंदगी तसल्ली और सुकून के नए रंग में ढल जाती है। खूबसूरत ख़्वाब हमेशा आपकी नींद को गुलजार रख सकते हैं। आपकी जिंदगी में चाहे जितने झिकाळ चल रहे हों लेकिन आपके लिए कोई सुंदर फूल चुनकर लाती लड़की का ख़्वाब आपकी जिंदगी को जीने लायक बनाए रख सकता है।

तो आज दिन में ही सो गया, किसी हसीन ख़्वाब की तलाश में। दिन में न सोने का अवसर मिलता है, न रुचि रहती है और न ही नींद आती है पर कई रातों को जागने के बाद आज दिन में सोया तो करीब दो घंटे सोया ही रहा। पर बिना ख़्वाब की नींद का क्या करें, नींद निष्फल रही। ख़्वाब गायब रहे। सच यह है कि अब न कोई ख़्वाब पीछा करता है और न कोई ख़्वाब अपने पीछे दौड़ाता है। बस यह सोचकर तसल्ली की जा सकती है कि नींद अभी एकदम उड़ी नहीं है। हमारी नींद उड़ाने वाले जाने कहां रास्ता भटक गए हैं, किसके ख़्वाबों में चले गए हैं आजकल। ख़्वाब दिखाकर दिल तोड़ने वालों से बुरा भी कौन होगा। जीना सिखाकर मार डालने वालों से निर्मम किसको कहें। कहीं पढ़ा हुआ याद आ रहा है कि किसी को प्रेम से भर देना और फिर मुंह फेर लेना सबसे बड़ी हिंसा है। फिर भी मैं ख़्वाब दिखाने वालों, जीना सिखाने वालों और प्रेम से भर देने वालों के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहता हूं। किसी ने हमारी जिंदगी को एक लम्हे के लिए भी खूबसूरत बनाया तो उसका गुण क्यों भूलें। केवल परिणाम ही हमारा लक्ष्य क्यों हो, प्रक्रिया जब हमें बेहतरीन लम्हे उपलब्ध करवा रही हो। रास्ते खूबसूरत हों तो कभी-कभी मंजिलों की अनदेखी की ही जा सकती है। जो छोड़कर चले गए, न जाते तो कितनी मुसीबतें पास होतीं। सामने वाले की बेवफ़ाई हमारी लाज रख लेती है वरना यह काम हमें करना पड़ता। यह और बात है कि हर ख़्वाब एक दिन टूटना तय ही है, फिर भी ख़्वाब के सहारे टूटते दिन कम हसीन नहीं होते। ऐसे में, मैं तुम्हें भी बड़ी शिद्दत से याद करता हूं कि जिंदगी के जरा-से टुकड़े को तुमने अपनी मौजूदगी से इतना खूबसूरत बना दिया कि वह थोड़े से लम्हे शेष जिंदगी से बड़े हैं।

खैर, इसी ख़्वाब पर पिछले दिनों एक ख़ब्त सूझी कि कहीं यह पूरी जिंदगी ही एक ख़्वाब तो नहीं। नींद में जैसे हम ख़्वाब को सच मानकर जीते रहते हैं, वैसे ही हम जिंदगी के ख़्वाब को सच मानकर जी रहे हों। ख़्वाब के दौरान यह थोड़े ही समझ आता है कि यह ख़्वाब है। यह तो जब नींद या ख़्वाब टूटता है, तब ही तो पता चलता है। तो हो सकता है कि कभी हमें भी यह ख़बर हो कि हम जिसे हक़ीक़त मानकर जीते रहे, इस पर रीझते रहे, मोहासक्त रहे, यह एक ख़्वाब ही था। यह बात चली तो मित्र अरविंद चोटिया ने गाकर सुनाया, "यह संसार फूल सेमल को सुंदर देखि लुभायो, चाखन लाग्यो रूई उड़ गई हाथ कछु नहीं आयो!" पं. भीमसेन जोशी के गाये इस भजन का लिंक भी उन्होंने दिया। सूरदास, कबीर और दूसरे भक्त कवियों ने भी संसार की नश्वरता की तुलना सेमल फूल से की है लेकिन मैं नश्वर की नश्वरता से ज्यादा उसके होने पर आसक्त हूं। जब तक है, तब तक उसकी नश्वरता सोचकर क्यों परेशान रहें। याद आता है फिल्म आनंद का यह संवाद, जब राजेश खन्ना कहते हैं, "यही कि क्या फ़र्क़ है सत्तर साल और छह महीने में। मौत एक पल है बाबू मोशाय। आने वाले छह महीने में जो लाखों पल मैं जीने वाला हूं, उसका क्या होगा। बाबू मोशाय! जिंदगी बड़ी होनी चाहिए, लंबी नहीं। हद करते हो। मौत के डर से अगर ज़िंदा रहना छोड़ दिया तो मौत किसे कहते हैं। क्यों दोस्त! बाबू मोशाय, जब तक ज़िंदा हूं तब तक मरा नहीं। जब मर गया तो साला मैं ही नहीं तो डर किस बात का...।" जो मिट ही जाना है, उसे खींचकर जी लेने में हर्ज ही क्या है। दुःख भी है तो उसे जी-भर के जियो और आगे बढ़ो। एक ही दुःख में तमाम उम्र कट जाए, इतनी पात्रता या इतना नसीब तो हमारे पास कहां। खैर, कोई फ़लसफ़ा मोह को गिनता होगा विकारों में, मुझे तो जिंदगी के लिए सबसे जरूरी और खूबसूरत चीज ही मोह लगती है। भले ही आप बैरागी होकर महात्मा बुद्ध बन जाएं और कैवल्य पा जाएं, यशोधरा का पति और राहुल का पिता बने रहने की उपलब्धि उससे कोई कम थोड़े ही होती है।

ख़्वाब की बात चली तो पिछले दिनों एक दोस्त का बताया किस्सा याद आया कि एक लड़की जो उसके ख़्वाब में कभी नहीं आई, उसकी पत्नी के ख़्वाब में अक्सर आ जाती है। दोस्त की पत्नी को लगता है कि वह लड़की उसके पति की प्रेमिका है और केवल इसी ख़्वाब के बाद दो-चार दिन दोस्त की जिंदगी जहन्नुम रहती है और इतने में किसी दिन फिर उसकी पत्नी कोई ख़्वाब देख लेती है। पति बेचारा दिनभर काम में उलझा रहता है और पति को बांधने के चक्कर में पत्नी, अपने पति की कथित प्रेमिकाओं में उलझ गई है। दूसरों को संचालित करने के चक्कर में हम खुद कब दूसरों से संचालित होने लगते हैं, हमें पता ही नहीं चलता। इधर, एक रील में डॉक्टर साहब बता रहे हैं कि सेट्रिजिन खाकर सोने से ख़्वाब नहीं आते हैं। मैं उस टेबलेट का नाम जानना चाहता हूं जो खाकर सोने से हमारी जिंदगी खूबसूरत ख़्वाबों से भर जाए। (16 अगस्त, 2026)

– कुमार अजय, राजस्थानी एवं हिंदी के चर्चित लेखक।

डिजिटल इंडिया के आर्किटेक्ट और सूचना तकनीक दूरसंचार क्रांति के जनक राजीव गांधी

डॉ. जे.के. गर्ग

प्रधानमंत्री रहते हुए स्व. गांधी ने कई महत्वपूर्ण काम किए, जिन्होंने देश के विकास को नई दिशा प्रदान की। राजीव गांधी को डिजिटल इंडिया का आर्किटेक्ट व सूचना तकनीक और दूरसंचार क्रांति का जनक कहा जाता है। राजीव गांधी ने अगस्त 1984 में भारतीय दूरसंचार नेटवर्क की स्थापना के लिए "सेंटर पार डिवेलपमेंट ऑफ टेलीमैटिक्स" की स्थापना करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस पहल से शहर से लेकर गांवों तक दूरसंचार का जाल बिछना शुरू हुआ। जगह-जगह पीसीओ खुलने लगे, जिससे गांव की जनता भी संचार के मामले में देश-दुनिया से जुड़ सकी। फिर 1986 में राजीव की पहल से ही एमटीएनएल की स्थापना हुई, जिससे दूरसंचार क्षेत्र में और प्रगति हुई।

स्व.गांधी मानते थे कि युवा पीढ़ी ही भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अहम भूमिका निभाएगा इसके लिए उनको कंप्यूटर टेक्नोलॉजी और विज्ञान की शिक्षा देना जरूरी है। कंप्यूटर की कीमतें घटाने के लिए राजीव ने इसे सरकारी नियंत्रण से बाहर निकल दिया और असेंबल कंप्यूटर का आयात शुरू किया। बड़ी टेलीकॉम कंपनी एमटीएनएल और बीएसएनएल की शुरुआत उनके कार्यकाल में ही हुई। राजीव जी जानते थे कि गांवों को सशक्त बनाने और लोकतंत्र में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए ग्राम पंचायतों को सत्ता में वही स्थान मिलना चाहिये जो संसद और विधानसभा का है। राजीव ने ही पंचायती राज अधिनियम के माध्यम से केन्द्रीकृत सत्ता का विकेंद्रीकरण करके पंचायतों को कई महत्त्वपूर्ण और वित्तीय अधिकार दिये थे। अयोध्या में विवादित स्थल का ताला खुलवाया, उन्होंने सनातन धर्मीयों की नाराजगी को दूर करने के लिए अयोध्या के विवादित स्थल का ताला खुलवा दिया और 1989 में राम मंदिर के निर्माण के लिए शिलान्यास की इजाजत भी दे दी। युवाओं को रोजगार देने के लिए जवाहर रोजगार योजना को शुरू किया था। राजीव ने 1986 की शिक्षा नीति के तहत ग्रामीण क्षेत्र के लाखों बच्चों को सर्वोत्तम शिक्षा देने के उद्देश्य से जवाहर नवोदय स्कूल प्रारम्भ किये।

इंदिरा गांधी एवं फिरोज गांधी के ज्येष्ठ पुत्र राजीव का जन्म 20 अगस्त 1944 को मुंबई में हुआ था। राजीव गांधी बचपन में बहुत ही संकोची स्वभाव के थे। जब वे दून स्कूल में पढ़ रहे थे, तब उनके नाना पं.जवाहरलाल नेहरू पहली बार उनसे मिलने स्कूल पहुंचे तो राजीव बाथरूम की बास्केट में छिप गए थे। राजनीति में आने से पहले राजीव गांधी एयरलाइंस में पायलट की नौकरी करते थे। राजीव का पूरा नाम राजीव रत्न गांधी था उनका यह नाम उनके नाना नेहरूजी ने रखा, क्योंकि नेहरू जी की पत्नी का नाम कमला था और राजीव का मतलब कमल होता है। राजीव गांधी संगीत प्रेमी थे, उनको पश्चिमी संगीत के साथ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय एवं आधुनिक संगीत पसंद था। लन्दन में राजीव गांधी की मुलाकात एड्विगो मानिओ से हुई थी। 1968 में राजीव गांधी ने उनसे शादी कर ली और उनका नाम ये नाम बदलकर सोनिया गांधी रखा गया। राजीव और सोनिया के पुत्र और पुत्री राहुल और प्रियंका है।

राजीव गांधी का स्वभाव स्नेहमय सहनशील और सरल था। स्व.राजीव गांधी ही वो इंसान थे जिन्होंने 19वीं सदी में इक्कीसवीं सदी के भारत का सपना देखा था। स्वभाव से धीर गंभीर किन्तु आधुनिक सोच एवं तार्किक क्षमता के धनी राजीव ने बीसवीं सदी में ही हिन्दुस्तान को 21 वीं सदी का उन्नत राष्ट्र बनाने का सपना संजोया था। दूरदर्शी युवा राजीव का सपना था कि भारत एक मजबूत, आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और मानवता की सेवा करने वाला दुनिया का अग्रणी राष्ट्र बने। राजीव कहते थे कि हमारे देश की एकता और अखंडता से बढ़कर कुछ भी नहीं है। भारत अविभाज्य है। राजीव जी के अनुसार शिक्षा हमारे समाज के लिए सबसे बड़ा समाजवादी उपाय है। इसे उन विषम व्यक्तियों को दूर कर समाज में समरसता पैदा करने वाला साधन बनना चाहिए जो हमारी विभिन्न सामाजिक व्यवस्था में हजारों वर्षों के दौरान पैदा हुआ। राजीव भारत को 21वीं सदी की दहलीज पर पहुंचना चाहते थे, वो देश को गरीबी के बोझ से मुक्त कराकर विरासत, और हमारे लोगों की बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम बनाना चाहते थे।

स्पष्टवादी राजीव के मुताबिक महिलाएं देश की सामाजिक चेतना होती हैं। वे हमारे समाजों को एक साथ रखती हैं। राजीव कहते थे कि धर्म के आडम्बर और उसके घिनोने स्वरूप के विरुद्ध होना अधार्मिक होना नहीं है; इसका अर्थ केवल सरकार का धर्म (संप्रदायवाद) से अलग रहना है। हमें स्पष्ट होना चाहिए कि धर्मनिरपेक्षता, जैसा कि हम समझते हैं, धर्म-विरोधी या गैर-धर्म नहीं है; यह केवल सरकार को धर्म से अलग करना है। हर व्यक्ति को इतिहास से सबक लेना चाहिए। हमें यह समझना चाहिए कि देश में जहां-जहां आंतरिक लड़ाई-झगड़े हुए हैं, वहां-वहां देश कमजोर हुआ है। इससे बाहर से खतरा बढ़ जाता है। इस प्रकार की कमजोरी से देश को बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। क्या हमारा लक्ष्य जातिविहीन समाज है? यदि हमारा लक्ष्य, एक जातिविहीन समाज है, तो निश्चित रूप से हमारा हर कदम उस उद्देश्य की ओर होना चाहिए। कोई भी धर्म नफरत/असहिष्णुता का उपदेश नहीं देता।

वे देश की कंप्यूटर क्रांति के जनक के रूप में भी जाने जाते हैं। रेलवे का कम्प्यूटरीकरण करके उन्होंने इस देश के सामने क्रांतिकारी परिवर्तन करके रख दिया। 40 वर्ष की अल्पआयु में ही में राजीव गांधी विशाल जनादेश के साथ भारत के सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री बन गये थे। उस चुनाव में कांग्रेस को 508 में से रिकॉर्ड 401 सीटें प्राप्त हुई थी। स्मरणीय रहे कि राजीव गांधी राजनीति में आने के अनिच्छुक थे किन्तु उनके छोटे भाई संजय की अकाल मृत्यु की वजह से परिस्थितियां ऐसी बनी कि उन्हें राजनीति में जबरन प्रवेश करना पड़ा। राजीव गांधी को अपने नाना नेहरु की तरह सुरक्षाकर्मियों का घेरा बिल्कुल पसंद नहीं था। वे अपनी जीप और कार खुद ड्राइव करना पसंद करते थे। राजीव गांधी को अपने नाना से आराम हराम है और अपने पिता से अपना काम खुद करो की प्रेरणा मिली थी। इक्कीसवीं सदी के भारत का निर्माण उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। राजीव गांधी सौम्य एवं निर्मल स्वभाव के दूरदर्शी राजनेता थे और किसी भी निर्णय में जल्दबाजी नहीं करते थे और निर्णय लेने से पहले पार्टी के नेताओं से गहन सलाह मशविरा करते थे क्योंकि उनके दिल मे लोकतंत्र की भावना समाई हुई थी। उन्होंने जो सोचा और किया वो वो पुराने ढर्रे की राजनीति से एक दम अलग था। वे अपने पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर व विचार-विमर्श करके ही किसी निर्णय पर पहुंचते थे। वर्तमान के सत्ताधारी शासन के विपरीत उनके स्वभाव में खुद का एकाधिकार की प्रवति उन में बिलकुल नहीं थी।

राजीव गांधी एक ऐसे प्रधानमंत्री थे, जो जनता से सीधे जुड़े थे और एक ऐसे नेता के रूप में विख्यात थे जिनकी पहुंच देश के आम आदमी के हृदय तक थी। एक ऐसा प्रधानमंत्री जिसने उस दौर में पंजाब की यात्रा की, जब देश की खुफिया एजेंसियों ने ऐसा करने से उनको मना किया था। राजीव गांधी ने पंजाब समस्या के समाधान को प्राथमिकता देते हुए 24 जुलाई, 1985 को अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंद सिंह लोंगोवाल के साथ समझौता करके अशांत पंजाब में शांती और सौहार्द के वातावरण का निर्माण किया। नवंबर 1982 में भारत में

राजीव गांधी

आयोजित सफल एशियाई खेलों के संचालन में उनकी महत्वपूर्ण एवं सराहनीय भूमिका थी। प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी अपनी माता इंदिरा गांधी से अधिक व्यावहारिक और उदार थे। लालफीताशाही पर लगाम लगाकर और नीतिगत बदलाव के जरिये उन्होंने निजी क्षेत्र को औद्योगिक और वाणिज्यिक गतिविधियों के विस्तार की अनुमति दी। कालांतर में यही दिशा 1990 के दशक में व्यापक आर्थिक उदारवाद और मुक्त व्यापार का आधार बनी जिसे नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह ने आगे बढ़ाया। वर्ष 1986 में मिजोरम में लालडेंगा के नेतृत्व में दशकों से चल रहे अलगाववादी हिंसक आंदोलन को मिजोरम समझौते के द्वारा खत्म कर राज्य में लोकतांत्रिक व्यवस्था की पुनर्स्थापना राजीव गांधी की बड़ी सफलता मानी जाती है। असम गणतन्त्र परिषद के साथ असम समझोता उन्होंने ही किया था, समझोते के बाद हुए चुनाव में विपक्ष की जीत और कांग्रेस की हार पर उन्होंने कहा कि भले ही उनकी पार्टी हार गई हो किन्तु प्रजातंत्र जीत गया है। जब राजीव ने भारत में कम्प्युटर क्रांति का सूत्रपात किया था तब तत्कालीन विपक्षी पार्टी एवं वर्तमान शासक दल के नेताओं ने यथा–जिनमें अटलबिहारी बाजपेयी, अडवानी और राष्ट्रीय सेवा संघ ने मखोल उड़ाया और उन्हें नौसिखिया बालक कहा।

80 के शतक के युवा सम्राट राजीव गांधी ने सही कहा था कि कोई भी साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक संस्था जो धर्म निरपेक्षता का विरोध करती हो, या कोइ भी राजनीतिक ताकत जो साम्प्रदायिक या धार्मिक हितों का आसरा लेती, उसे किसी भी सूरत में राष्ट्र को कमजोर बनाने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए। समय ने प्रमाणित कर दिया कि राजीव दूरदर्शी नेता थे। ईगो की भावना से राजीव मुक्त थे उन्होंने कभी नहीं कहा कि मैने यह किया, मैने वो किया– किन्तु वे कहा करते थे कि हमें ऐसा या हमें वैसा करना है।

राजीव शालीनता की प्रतिमूर्ति थे उन्होंने कभी भी अपने किसी भी राजनेतिक विरोधि के प्रति अनर्गल एवं कर्कश शब्दों का प्रयोग नहीं किया। राजीव को जब मालुम पड़ा कि अटलजी गम्भीर रोग से ग्रस्त है तो उन्होंने उन्हें उयु.एन.ओ. जाने वाले देलीएष्ण का सदस्य बना कर उनको अमेरिका भेजा और राजदूत को निर्देश दिया कि उनका उपचार राजकीय खर्चे से करवाया जाये। राजीव के राजनैतिक विरोधी श्री अटलबिहारी वाजपेयीजी ने कहा था कि अगर वे आज जिन्दा है तो इसकी वजह राजीव ही है। लोग उनका भाषण सुनने के लिए घंटों इंतज़ार किया करते थे। राजीव ने राजनीति में भी नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया, बोफोर्स कांड के आरोपी के बीच संसद भंग कर नये चुनाव करवाने का जज्बा उन्हीं में था।

बोफोर्स कांड की कई वर्षों तक उनके विरोधियों दुवारा करवाई गई जाँच में उनके विरुद्ध कोई साक्ष्य नहीं मिले थे। इस जाँच को करवाने में करदाताओं के करोडों रूपये बर्बाद हो गये। सीधे-सच्चे ईमानदार राजीव विरोधियों एवं मीडिया के झूठे कुत्सित प्रचार के शिकार बन गये। 1989 में हुये लोकसभा चुनाव में 195 सीटे जीतने और सबसे बड़े दल के नेता होने के बावजूद उन्होंने कहा कि जनादेश कांग्रेस के खिलाफ है इसलिए उन्होंने विरोधी पक्ष में बेठने का फेसला करके स्वस्थ लोकतान्त्रिक परम्परा स्थापित की थी।

राजीव ने ही भारत को विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना सिखाया था। उन्होंने दक्षिण एशिया में शांति के प्रयास किए और इस देश में भाषा के आधार पर हो रहे बिखराव को भी रोका। इसी का परिणाम था कि राजीव गांधी ने श्रीलंका में शांति प्रयासों के लिए भारतीय सैन्य टुकड़ियों को भेजा लेकिन इसके नतीजे में वे खुद लिट्टे के निशाने पर आ गए और उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई। 21 मई, 1991 को राजीव गांधी एक रैली को संबोधित करने के लिए चेन्नई से 30 किलोमीटर दूर श्रीपेरंबुदूर में पहुंचे। इन्हीं में एक लिट्टे सदस्य धनु भी थी। राजीव गांधी के आसपास काफी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद धनु ने गाँधी के पैर छूये और एकाएक बम फट गया जिसको धनु ने जो कि उसने अपने कपड़ों में छुपाया हुआ था। राजीव गाँधी समेत 17 अन्य लोग भी काल के ग्रास बन गये। इसी कारण से 21 मई, राजीव गांधी बलिदान दिवस को आतंकवाद विरोधी दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। राजीव भी भी अपनी माँ इंदिराजी के जैसे आतंकवाद के शिकार बनें। उन्हें 'भारत रत्न' से भी नवाजा गया था। कुछ लोग ज़मीन पर राज करते हैं और कुछ लोग दिलों पर। स्वर्गीय राजीव गांधी एक ऐसे इंसान थे, जिन्होंने जनमानस के हृदय पर भी राज किया। समूचा राष्ट्र राजीव गांधी को उनकी 82 वीं जयंती पर पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 20 अगस्त, 2026

सावन मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत 2083, विशाखा नक्षत्र प्रातः 9:08 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 4:25 तक, विष्टि करण प्रातः 8:19 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-कर्क, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः 6:09 से आरम्भ होगा। भद्रा प्रातः 8:19 तक है। आज दुर्गाष्टमी, मेला नयनादेवी और चिन्तापूर्णी है। आज दुर्गाष्टमी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:41 तक, चर 10:54 से 12:30 तक, लाभ-अमृत 12:30 से 3:43 तक, शुभ 5:20 से सूर्यास्त तक।

राहुकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:04, सूर्यास्त 6:56

मेष – अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

वृष – परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन – आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आज स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

कर्क – व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह – घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक धन खर्च होगा। परिवार में आपसी मतभेद हो सकते हैं।

कन्या – परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला – महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक – आज परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु – मानसिक तनाव दूर होगा। मनःस्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। परिवार में अतिथियों के आगमन रहेगा।

मकर – आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखना ठीक रहेगा।

कुंभ – आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मीन – व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।